देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
June 2023
Vol.-17, Issue-6(1)

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

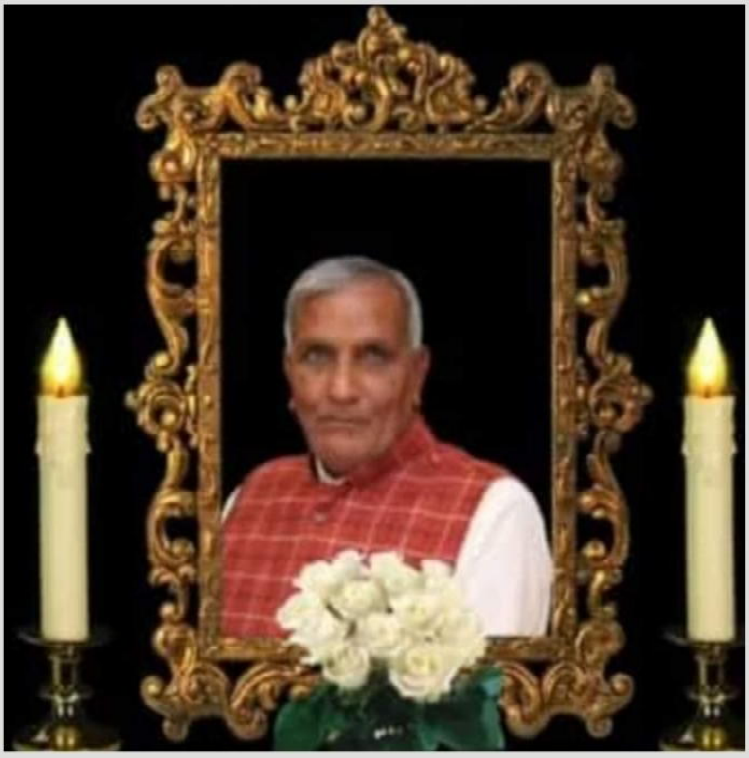

कार्यकारी सम्पादक :
शकुन्तला चौहान

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 17 **ISSUE-6(1)** **(जून 2023)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

कार्यकारी सम्पादक :

प्रो. शकुन्तला

गांव व डाकखाना खन्द्रावली
जिला शामली, उत्तर प्रदेश, पिन कोड 247775
मो नं- 8077819081

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

जून 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	प्रो. शकुन्तला	9–9
2.	ROLE OF FUNGI IN BOTH REJUVENATION AND CONTAMINATION OF RIVER GANGA	DIPIKA, Dr. Avadh Narayan Dwivedi	10-15
3.	गोपालदास नीरज के काव्य में बुद्ध–जैन–सूफी दर्शनों का समन्वय	ब्रजेश उपाध्याय	16–22
4.	भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–व्यथा	प्रदीप कुमार सिंह	23–28
5.	'प्रकृति के पहरेदार' तथा 'कलम को तीर होने दो' : एक तुलनात्मक अध्ययन	मरीना एक्का	29–34
6.	असंगघोष के काव्य में दलित विमर्श	आशा, डॉ. प्रीति आर्या	35–37
7.	साम्प्रदायिकता का जीवंत दस्तावेज : तमस	नटराज गुप्ता	38–42
8.	'चरखा' महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों का मूल आधार	प्रीती रानी	43–47
9.	रामविलास शर्मा का आलोचनात्मक चिंतन	सुरभि मिश्रा	48–51
10.	The Exploration of the Great Mentor Dr. Sarvepalli Radhakrishnan	Dr. Sanjeev Tayal	52-59
11.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य की विषय–वस्तु	पंचमणि कुमारी	60–64
12.	दलित चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति (सुदेश कुमार तनवर का कविता संग्रह 'माटी के वारिस' के विशेष संदर्भ में)	डॉ. भूपेंद्र निकाळजे	65–69
13.	वाल्मीकि–रामायण में नारी की स्थिति	डॉ. रंजना गुप्ता	70–74
14.	इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व के क्षेत्र में भारतीय भाषाएं	नीलम पाटीदार	75–80
15.	ग्लोबल गाँव के देवता–असुर जनजाति के विस्थापन की महागाथा	Varna S	81-87
16.	जुलूस नाटक में सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ	कपिल कौशिक, डॉ. विकास शर्मा	88–92
17.	भारत में मानव अधिकार और संवैधानिक उपबंधों का विश्लेषण	डॉ. सविता यादव	93–97
18.	वैश्विक परिदृश्य में डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कविताओं में जीवन एवं दर्शन : कविता संग्रह 'मृगतृष्णा दर्पण अंतर्मन का' के संदर्भ में	डॉ. कोयल विश्वास	98–102
19.	21वीं सदी के हिंदी उपन्यास एवं कृषि संकट	पिंकी	103–106
20.	भारतीय समाज में नारी का स्थान	स्मिता शंकर	107–111
21.	हिंदी सिनेमा और सामाजिक चेतना	आपी लंकाम	112–115
22.	आधुनिक युग में मीरा के पदों का प्रभाव	विनीत शर्मा	116–118
23.	बालकृष्ण शर्मा नवीन के काव्यों में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना	डॉ. जे. सेन्दामरै	119–122

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
June 2023 Page No. : 65-69

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

दलित चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति

(सुदेश कुमार तनवर का कविता संग्रह 'माटी के वारिस' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. भूपेंद्र निकाळजे

हिंदी विभाग, राधाबाई काळे महिला महाविद्यालय, अहमदनगर।

सुदेश कुमार 'तनवर' साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। समाज का संपूर्ण चित्र साहित्य में अभिव्यक्त होता है। समाज की परिस्थिति को कवि अपने शब्दों के द्वारा अभिव्यक्ति देता है। कवि अतीत को देखकर वर्तमान को सचेत करते है, समाज में एक वर्ग जो सदियों से उपेक्षित रहा है वह दलित है। दलित साहित्य एक नई चेतना के रूप में हमारे बीच है, क्योंकि वह अन्याय के खिलाप बोलता है। वह मानव अधिकारों की बात करता है, अपने हक्क को चाहता है, जीवन में जो सहा उसी को अभिव्यक्त करता हैं सदियो से चली आ रही पंरपराओं का विरोध वह करता है, नई समाज व्यवस्था की माँग दलित साहित्य का मूल उद्देश रहा है। भारतीय समाज व्यवस्था यह जाति तथा धर्म प्रधान थी, जातीयता की विषम व्यवस्था के कारण समाज में ऊँच–नीच, श्रेष्ठ–कनिष्ठ तथा स्त्री–पुरुष आदि भेद रहे है। अस्पृश्य व्यवस्था के कारण दलित वर्ग का जीवन कंलकित बन गया है। इसे दूर करने का प्रयास तथागत गौतम बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजर्षि शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आबेडकर आदि महामानवों ने सामाजिक परिवर्तन किया है।

इतिहास हमारे वर्तमान को प्रभावित करता है, और यदि हमको अपना वर्तमान बेहतर करना है तो सबसे पहले इतिहास की त्रुटियों की छान बीन करनी होगी। इसी विचार से दलित कवि अपने और पूर्वजों पर छाए गए जुल्मों की शुरुआत इतिहास और मिथकों में ढूँढ़ते है, दलित साहित्य में उभरी दलित चेतना मूलतः दलित समाज के अस्मिता बोध, संघर्ष, अन्याय, अपमान और उपेक्षा के प्रति नकार और समाज की अत्याचारी व्यवस्थाओं मे परिवर्तन का सूचक है। दलित कविता उसी वेदना से उठी टीस, अत्याचार और अपमान के विरोध में उठी बुलंद आवाज के रूप में हमारे सामने लगातार, अपनी मौजूदगी का एहसास कराती रही है। यह आवाज 'आह से उपजा गान' तो है लेकिन वह ज्यादा देर तक इसी रूप में नहीं रहता। वह आत्मविश्वास से भरपूर सशक्त दहाड़ में भी तब्दील होती सुनाई देती है। आज की दलित कविता, चाहे वह हिंदी पट्टी में रची जानेवाली हो, या फिर मराठी, पंजाबी, तमिल, मलयालम या बांग्ला में सबने अपना ओज तेजस्विता और वैचारिकता को अभिव्यक्ति दी है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित दलित कविता समाज में 'समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से उपजे लोकतंत्र की बात करती है।

सुदेश कुमार 'तनवर–पहली पुस्तक' रात के इस शहर में 1991 प्रकाशित; दूसरी 'नियति नहीं यह मेरी' 1999 प्रकाशित तीसरी घर वापसी 2012 दलित कविता का विद्रोही स्वर (बारह भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हिंदी

दलित कविता) 'माटी के वारिस'–2020 में रश्मि प्रकाशन लखनऊ से प्रकाशित है। इस कविता संग्रह में 31 कविताएँ है। समाज के विविध प्रसंगों को आधार बनाकर कवि ने लिखी है। वर्तमान समाज पर भाष्य करती यह कविताएँ समाज का प्रतिबिंब दिखाती है। इस कविता संग्रह का मूल्यांकन चौथीराम यादव, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम जी ने किया है। प्रस्तूत कविता संग्रह में भारतीय धर्म और संस्कृति पर व्यंग करते है। दलित समाज एक तरफ सामाजिक धार्मिक अधिकारों के लिए लड़ रहे है, तो दूसरी और उनसे अलग अस्मिता के लिए भी संघर्षरत है। समाज के भीतर की व्यवस्था पर वह कवि कलम चलाते है, शब्दों में वह भाव अभिव्यक्त करते हैं।

''वे कौन है,
हर बार झोंक देते मुझे
अराजकता साम्प्रदायिकता
जातिवाद की आग में
बटोर ले जाते है
वाह–वाही
मेरे ही बंधु–बाधवों से
तालियाँ पिटवाकर![1]

कवि समाज को अस्थिर बनाने वाले पर व्यंग्य करते है। समय समय पर समाज को अस्थिर होता देखकर कवि कहता है, वह कौन है जरा बताओ तो? जो पड़दे के पिछे रहकर यह सब कुछ कर रहा है। समाज के भीतर अराजकता निर्माण कर रहा है। कभी जातिवाद के नाम पर साम्प्रदायिकता के नाम पर समाज के भीतर अलगाव डालने का प्रयास कर रहा है। जातिवाद कोबढ़ावा देकर समाज में फूट डालने का प्रयास हो रहा है। अलगाव करने का प्रयास हो रहा है, यह हमारे देश के लिए उचित नहीं है। समाज की परिस्थिति पर कवि आवाज उठा रहा है।

कवि समाज के भीतर जो धीरे धीरे शाब्दिक परिवर्तन से वैचारिक परिवर्तन हो रहा है, उस पर निशाना लगाते है, समाज के भीतर एक वर्ग यह समाज के भीतर शाब्दिक परिवर्तन कर रहा है। दलित शब्द जिसका दलन हुआ, कुचला हुआ ऐसा था, देश की आजादी के बाद दलित शब्द ने नयी पहचान बनायी है। अस्मिता बोधक बन गया लेकिन कुछ लोग इसे जाति से जोड़ने लगे है, इसलिए कवि समाज में इस तरह से नयी शब्दावलियों पर गठन पर प्रहार करते है।

"तुम
क्यों प्रचारित करना चाहते हो
नये नये शब्द?
गढ़ना क्यों चाहते हो
नयी–नयी शब्दावलियाँ ?
आखिर
आग्रह क्यों है तुम्हारा

आदिवासी की जगह वनवासी पर।"[2]

दलित कविता एक साहित्यिक विधा ही नहीं बल्कि एक जन आंदोलन के रूप में हमारे बीच उपस्थित है। दलित कविता में मात्र जाति–भेद या फिर हिंदू समाज की वर्ण–व्यवस्था के विरोध का ही स्वर नही बल्कि दलित समाज की दयनीय स्थिति के लिए उसकी आर्थिक स्थिति पर भी इशारा करती है। वह पूँजीवाद का भी विरोध करती है। निजीकरण वस्तुतः एल. पी. जी. यानी लिबर लाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन और ग्लोबलाइजेशन के कारण समाज की व्यवस्था पर परिवर्तन हो रहा है। इन सबमें दलित समाज फिर से हाशियों के बाहर रखने का प्रयास रहा है।

"निजीकरण में
तुम ही, छोटी बड़ी
सारी कंपनियों के मालिक रहोगे
चौकीदारी भी जहाँ लाइन में खडे कर
दी जाएगी
जात पुछकर।"[3]

कवि समाज में हो रहे बदलाव को देखकर आवाज उठाते है। समाज के भीतर निजीकरण के बाद दलितों के जीवन पर कवि ने चिंता जतायी है। प्रसिद्ध लेखिका डॉ. विमल थोरात ने लिखा है "दलित कविता, दलित जीवन के यथार्थ की कविता है। उसने दलित जीवन के हर क्षण, हर पीडा, हर एक वेदना और क्रांति गर्भ संवेदना को साकार किया है। दलित कवि के सामने भावावेश में बहने के अनेक अवसर थे, क्योंकि उन्होने जीवन की बड़ी घिनौनी तस्वीर देखी है। परन्तु उसकी कविता जीवन वस्तुगत यथार्थ को मूलाधार मानती है।'[4] दलित कविता अपने यथार्थ को व्यक्त करती है, अपने दर्द से जुड़े दस्तावेंजो को स्वयं समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहती है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने दलितों को अपने अधिकारों से दूरकर के गरीबी में ही जीने को बाध्य किया है। कवि ने प्रस्तूत कविता संग्रह में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

"उनकी
ढलती उम्र में भी दमकती लाली
मेरा
जवानी की दहलीज पर भी
बुढीया या शरीर।''[5]

कवि समाज व्यवस्था में दलित जीवन को व्यक्त कर रहे है। दलित वर्ग के अंतर्गत भूख महत्वपूर्ण है, पेट भरने के लिए चाहे जो भी काम हो वह करते है घर में खाने वाले चार और कमाने वाला एक ऐसी स्थिति यह बन गयी है सबको खिलाते–खिलाते घर में बड़ा सदस्य भूखा सो जाता है। पेट की आग कुछ खाकर पानी पी कर बुझायी जाती है। परिणाम कुपोषण के कारण जवानी की दहलीज पर बुढ़ापन यह आ गया है। इसलिए जो समाज का एक धनी वर्ग समय पर भोजन और सब सुख सुविधा के कारण चेहरे पर दमकती लाली दिखाई दे रही है। तो दुसरी और दलित समाज की अवस्था का चित्रण है, कम उम्र में जिम्मेदारी और काम करते करते सारा जीवन कष्ट के कारण जीर्ण हो गया है।

दलित समाज सदियों से अन्याय को चुपचाप सहता आ रहा है परिस्थिती के कारण वह मजबूर था, रूढी परंपराओं तथा समाज की कुछ मान्यताओं ने दलित समाज को जीवन में कष्ट, पिड़ा अपमान को सहकर वे जीवन जी रहे है। यह मनुष्य होकर भी पशु समान अपना जीवन जी रहे है। इन सब यातनाओं को सहकर अब वह इससे मुक्ति की चाह उसके मन के भीतर है। आज दलितों में चेतना आ चुकी है। अब वे अपने हक को समझते है, और अपने ऊपर होनेवाले शोषण का प्रतिरोध करते है।

"मेरी लड़ाई
किसी और से नहीं
उस, पहले आक्रांता से है
जिसने छल से तोड़ी ही नहीं, मेरी गर्दन।"[6]

दलित समाज डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित है। परिणाम उनमें शिक्षा के प्रति रूझान आ गया है और धीरे–धीरे समाज के भीतर संघटन आ गया है। संघर्ष से अपने हक को प्राप्त करना आज दलित वर्ग कर रहा है। मानवतावाद दलित साहित्य के मूल में है, मनुष्य को मनुष्य के जैसा व्यवहार यह होना आवश्यक हैं, वह पशु नहीं है उसे पशु जैसे रखा गया था, अब वह उससे मुक्ति चाहता है।

समाज व्यवस्था में नारी भी चुपचाप सहकर अपना जीवन जीती है। समाज व्यवस्था में पितृसत्ताक कुटुंब व्यवस्था होने के कारण नारी; को समाज में दुय्यम स्थान है, वह सिर्फ सहती आ रही है, व्यवस्था ने उसे पढ़ने पर भी रोक लगाई थी, लेकिन सावित्री बाई फुले के कारण नारी शिक्षित बन गयी है, लेकिन सदियों से भारतीय समाज व्यवस्था में नारी सब कुछ सहते आ रही है। उसे शिक्षा से वंचित किया, सती प्रथा ने उसे समाप्त किया। ऐसे अनेक रुढ़ि परंपरा के कारण नारी को उपेक्षित रखा गया है। लेकिन नारी ने आवाज नहीं उठाई।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने स्त्री शिक्षा पर ही बल दिया है बल्कि उनके स्वास्थ्य के प्रति गंभीर थे, 28 जुलाई 1928 में मुंबई विधान परिषद में फैक्ट्री तथा अन्य संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं की प्रसूति अवकाश की सुविधा देने संबंधी बिल पर अपने विचार रखते हुए उन्होने कहा था, 'महिलाओं को प्रसूति अवकाश सुविधा प्रदान करना राष्ट्रीय हित में एक महत्वपूर्ण कदम है।' उनका मानना था, कि–सामाजिक क्रांति में नारी वर्ग को पुरुष वर्ग की सहयोगी बनना होगा।[7]"

"शर्म से पानी–पानी हो जाता हूँ
उनकी चुप्पी देखकर।
इसे, उनकी सहनशीलता कहूँ
अंधश्रद्धा
या फिर
मानसिक गुलामी की
पराकाष्ठा?"[8]

'दलित साहित्य में जहाँ सामाजिक दर्द है जातिवाद की पीड़ा है। शोषण तथा उत्पीड़न की कसक है वही जाति उत्पीड़न तथा शोषण के कारणों की तलाश भी है। इसमें भाग्यवाद को अस्वीकार करने की भावना भी है। दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह की वर्ण व्यवस्था जाति–पाँति, ऊँच–नीच भेदभाव के

दायरे से ऊपर है। जिसे धर्म, भाषा, और प्रदेश की सीमाओं में नही बांधा जा सकता है।[9]'

प्रस्तुत कविताओं के द्वारा समाज व्यवस्था का चित्र हमारे सामने उभारा है। समाज का एक वर्ग परंपरागत व्यवसाय करते हुए वह उसी में ही समाप्त होता है, वह दूसरा व्यवसाय नहीं कर सकता था। प्राचीन परंपराए यह समाज में विषमता को दर्शाती है।

"अगर होते
खुशी–खुशी
जानवरों की खाल उतारते
चमड़ा रंगते, जुता बनाते
नालियाँ साफ करते
सड़क पर झाडू लगाते
मिट्टी या फिर, धातु के बर्तन बनाते
कपड़ा बुनते या फिर उन्हें सिलाते।"[10]

''जाति का विनाश" नामक अपने निंबंध में डॉ. अंबेडकर जी ने लिखा है– 'यदि आप जाति (आधारित समाज) नहीं चाहते तो अपका आदर्श समाज क्या है – यह सवाल अनिवार्य रूप से पूछा जाएगा।

यदि आप मुझसे पूछें तो मैं कहूँगा कि मेरा आदर्श ऐसा समाज जो, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता पर आधारीत है।[11]'

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि, दलित शोषण समाप्त नहीं हुआ है। आज भी लोग एक–दूसरे को जाति के नाम से ही पहचानते है। जाति से ही लोग ऊंच–नीचता का सम्मान देते है। प्रस्तुत कविता संग्रह की अधिकांश कविताओं में दलितो की पीड़ा व्यथा, व्याकुलता, अन्याय, समस्याएँ, जातिगत भेदभाव आदि का चित्रण है। कवि वर्गभेद–वर्णभेद रहित मानवातावादी समाज की कल्पना करते हैं। प्रस्तुत संग्रह की कविता की भाषा सरल व सटीक है। कविता का भावार्थ पाठक सरलता से समझ सकते है। प्रस्तुत कविताओं में कवि ने सामाजिक यातनाओं और पीड़ा का मार्मिक वर्णन किया है।

संदर्भ :–

1. माटी के वारिस– सुदेश कुमार तनवर – पृष्ठ सं. 38
2. वही – पृष्ठ सं 41
3. वही – पृष्ठ सं. 45
4. रमणिका गुप्ता दलित चेतना साहित्य – पृष्ठ सं. 75
5. माटी के वारिस– सुदेश कुमार तनवर – पृष्ठ स. 50
6. वहीं – पृष्ठ सं. 82
7. डॉ. अम्बेडकर के विचार – पृष्ठ सं. 12
8. माटी के वारिस – सुदेश कुमार तनवर – पृष्ठ सं. 89
9. डॉ. माता प्रसाद हिंदी काव्य में दलित काव्यधारा – पृष्ठ सं. 154
10. माटी के वारिस– सुदेश कुमार तनवर –पृष्ठ सं. 96
11. कलेक्टेड वर्क्स– वाल्यूम–1 डॉ. बी. आर. अम्बेडकर संपादक वसंत मून – पृष्ठ सं. 57